जीवन में सफलता का मूल-मंत्र: MAGIS

(सन्त इग्नासियुस लोयोला का महोत्सव 2011 - संत ज़ेवियर स्कूल, डोरण्डा)

आज जब हम लोयोला के सन्त इग्नासियुस का स्मरणोत्सव बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मना रहे हैं, तो उनके जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर मनन-चिन्तन करना हमारे लिए नितान्त आवश्यक और अपरिहार्य है। उनके जीवन-दर्शन का एक अति महत्त्वपूर्ण पहलू है MAGIS जो हमारे अध्ययन-अध्यापन को और अधिक सार्थक, सफल और सुव्यवस्थित बनाने में अत्यन्त मददगार सिद्ध हो सकता है। MAGIS का अथ है MORE and BETTER अर्थात् हमेशा कड़ी मेहनत और लगन के साथ उच्चतर और महत्तर लक्ष्यों की प्राप्ति की निरंतर चेष्टा करते रहना। यदि हम सच्चे हृदय और सच्चे मन से सन्त इग्नासियुस के MAGIS को अपने जीवन में अपनायेंगे तो निश्चय ही विद्यार्थी के रूप में अपनी पढ़ाई-लिखाई और अध्यापक-अध्यापिका के रूप में अपने अध्यापन कार्य मे उत्कृष्ट और वांछित परिणाम पायेंगे। उनके MAGIS से प्रस्फुटित होने वाले नीतिगत विचारों में-से चार पहलू हमारे जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने में हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं - लक्ष्य की स्पष्टता, दृढ़ता और आत्मविश्वास, सबकुछ ईश्वर की महत्तर महिमार्थ करना और सृष्टि के साथ मनुष्य का तादात्मय सम्बन्ध।

(क) लक्ष्य की स्पष्टता

सन्त इग्नासियुस ने अपने जीवन के हरेक मोड़ में किसी-न-किसी लक्ष्य को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया और उसकी प्राप्ति के लिए वे हमेशा कड़ी मेहनत करते रहे। वे बेल्ट्रॉं दे लोयोला और दोन्या मारिया की तेरह सन्तानों में सबसे छोटे थे। तत्कालीन सामाजिक परंपरा के अनुसार पहलौठा बेटा ही पैतृक सम्पति का उत्तराधिकारी होता था। इसलिए कुलीन घराने में जन्म लेने के बावजूद उनके सामने भविष्य में अपनी आजीविका का कोई स्थायी साधन ढूँढ़ना एक मजबूरी ही नहीं, वरन् एक आवश्यकता भी थी। पढ़ाई-लिखाई में उनकी कोई खास रूचि न देखकर उनके पिता ने उन्हें सोलह वर्ष की उम्र में अपने एक मित्र के परिवार में रहने भेजा ताकि वे वहाँ के कार्यों में हाथ बँटा सके। वहीं राजकीय परिवारों और उच्च अधिकारियों के सम्पर्क में उन्होंने महत्वपूर्ण सामाजिक, सामरिक और व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने किसी काम को कभी छोटा न समझा और उन्हें जो भी कार्य सौंपा गया, उसे पूरी तन्मयता और लगन से किया क्योंकि उनमें हमेशा सर्वोत्तम फल प्राप्त करने की आकांक्षा क्रियाशील रहती थी। कहा गया है - फल की चिन्ता किये बिना कर्म किये जा। आज के सन्त के जीवन के संदर्भ में तो मैं यही कहना चाहूँगा कि हमें हमेशा सर्वोत्तम फल लाने का लक्ष्य हमारे सामने रखना चाहिए। सर्वोत्तम फल का लक्ष्य हमें हमारे दैनिक जीवन के संघर्षों और कठिनाइयों से लड़ने का साहस और हमारे इरादों को मजबूत बनाता है। हमारे माता-पिता, हमारे अध्यापकगण हम विद्यार्थियों से हमेशा सर्वोत्तम फल की आशा करते हैं। हमें उन किसान भाइयों के समान होना चाहिए जो अच्छी फसल की उम्मीद में ही दिन-रात खेतों में लग रहत हैं चाहे धूप हो या छाँव या फिर गरमी हो या बरसात। महाभारत की कथा में वर्णित द्रौपदी के स्वंयबर में अर्जुन ने ऊपर घूमती मछली की आँख को नीचे परछाई में देखकर वध दिया क्योंकि उसने लक्ष्य को स्पष्ट रूप से देख लिया था। आइए आज हम अपने जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करने का सम्पूर्ण प्रयास करें। उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें ऐसो प्रार्थना करनी चाहिए मानों सबकुछ ईश्वर पर ही निर्भर हो, लेकिन साथ-ही-साथ ऐसी मेहनत करते जाना चाहिए मानों सबकुछ खुद पर ही निर्भर हो। ऐसा कर पाने की कल्पना हम तभी कर सकते हैं जब सन्त इग्नासियुस के समान हमारे सामने हमारे जीवन का लक्ष्य स्पष्ट हो

और उसे प्राप्त करने के लिए हम महत्तर और उच्चतर तन्मयता से उनके समान कठिनाइयों, असफलताओं और संघर्षों के बीच कड़ी मेहनत करने की इच्छा रखते हों।

(ख) दृढ़ता और आत्मविश्वास

एक बार अपने सामने लक्ष्य स्पष्ट करने के बाद उसे प्राप्त करने के लिए सन्त इग्नासियुस पूरे आत्मविश्वास और दृढता से डट जाते थे। समकालीन अन्य कुलीन नवयुवकों की तरह किसी खूबसूरत नवयुवती को अपनी ओर आकर्षित करने का उनका लक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट था। इसके लिए उन्होंने बड़ी तन्मयता से व्यावहाारिक ज्ञान में निपुणता और अस्त्र-शस्त्र में गजब की चपलता हासिल की। यद्यपि उनका कद औसतन छोटा था, उनके आत्मविश्वास और सर्वोत्तम कार्य करने की दृढ़ता ने कइयों का दिल जीत भी लिया। सन् 1521 में जब फ्रांसिसी सैनिकों ने नभारे की राजधानी पम्पलोना पर आक्रमण कर दिया तो हार के कगार पर रहने के बावजूद दुर्ग की रक्षा में वे दृढ़तापूर्वक डटे रहे। दुर्भाग्यवश 20 मई 1521 को फ्रांसिसी तोप के एक गोले से वे गंभीर रूप से घायल हो गये। उनका दाहिना पैर टूट गया और बाँया पैर भी ज़ख्मी हो गया। अपने पुराने शौर्य और शारीरिक सौष्ठव को प्राप्त करने के लिए ही उन्होंने दो बार ऑपरेशन कराना स्वीकार किया, क्योंकि पहली बार में उनका एक पैर छोटा हो गया था। लँगड़ा-लँगड़ा कर चलना उन्हें कतई मंजूर नहीं था। उस जमाने में बिना बेहोशी की दवा के दो बार ऑपरेशन कराना उनके अदम्य साहस और दृढ़ आत्मविश्वास को ही दर्शाता है। बहुत बार जब हमें कठिनाइयाँ और दु:ख-तकलीफें घेरने लगती हैं तो हमारा आत्मविश्वास डोलने लगता है - घर की परिस्थिति ठीक नहीं है, माता-पिता या परिवार के प्रियजनों का स्वर्गवास हो गया है या फिर परीक्षा में अच्छे अंक नहीं आये। इस वर्ष के इंटरमीडिएट परीक्षाफल इस बात का साक्ष्य देते हैं कि असफलता या खराब रिजल्ट विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षक-शिक्षिकाओं पर कितना दूरगामी प्रभाव डालता है। ऐसी परिस्थितियों में बहुत बार ईश्वर पर से हमारा भरोसा तो उठता ही है, खुद अपने-आप पर विश्वास नहीं रह जाता। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति में सत्त इग्नासियुस का आत्मविश्वास हमारे मजबूत विश्वास का आधार बन सकता है। वे जब सात वर्ष के थे, तब खुद उनकी माँ का स्वर्गवास हो गया। अपने पैरों पर खड़े होने की चुनौती सदा उनके मुँह बायें खड़े रहती थी। फिर पम्पलोना की लड़ाई में उनके शौर्य और शारीरिक सौष्ठव बनाये रखने वाले उनके पैर ही टूट गये। इन सबके बावजूद उनका आत्मविश्वास डिगा नहीं, वरन् और ही मजबूत होता चला गया। ठीक ही कहा गया है - भगवान उन्हीं की मदद करते हैं जो अपनी मदद खुद करते हैं। उन्होंने बड़े आत्मविश्वास से सभी चुनौतियों का डटकर सामना किया और ईश्वर ने हरेक कदम में उनकी मदद की। अपने दृढ़ आत्मविश्वास के कारण ही उन्होंने अन्ततः ईश्वर और मानव-समाज की सेवा हेतु तमाम विषम परिस्थितियों के बावजूद येसु समाज की स्थापना कर डाला। हमें भी ऐसी ही दृढ़तर और गहनतर आत्मविश्वास की कामना करना चाहिए।

(ग) सबकुछ ईश्वर की महत्तर महिमार्थ करना (*Ad maiorem Dei gloriam)*

यह सच है कि अपने मन-परिवर्तन के पहले तक सन्त इग्नासियुस ने नाम-यश कमाने को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। किन्तु उनके लिए ईश्वर की योजना बिल्कुल ही अलग थी जिसकी कल्पना शायद स्वयं उन्होंने भी कभी नहीं की थी। पम्पलोना की लड़ाई में घायल होने के बाद चंगाई के लिए जब उन्हें लोयोला के पारिवारिक दुर्ग में लाया गया, तो उन्हें चंगाई के दौरान प्रभु येसु ख्रीस्त की जीवनी के साथ-साथ सन्तों की जीवनी पढ़ने का मौका मिला। सन्तों के अद्भुत और महान् कार्यों के बारे जानकर उनके मन में बार-बार ये विचार आया - यदि उन्होंने ने ऐसा किया तो मैं क्यों नहीं कर सकता। बस, इसी विचार ने उनके सामने जिन्दगी का एक नया मकसद, एक नया लक्ष्य निर्धारित कर दिया और उनकी

ज़िन्दगी ही पूर्णरूपेण बदल गयी। उन्होंने उनके जीवन का अनुसरण करने और उनसे एक कदम आगे निकलकर सबकुछ ईश्वर की महत्तर महिमा के लिए करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। उनके दिल में प्रभु येसु के ये वचन घर कर गये - "मनुष्य का इससे क्या लाभ यदि वह सारा संसार प्राप्त कर ले, लेकिन अपना जीवन ही गवाँ दे" (Mt 16:26) यहीं से दुनियावी नाम-यश के पीछे भागने वाला सन्त इग्नासियुस ख्रीस्त के पीछे भागने वाला तीर्थयात्री बन गया। सबकुछ ईश्वर की महत्तर महिमार्थ करने का जीवन-दर्शन हमें अपने दैनिक जीवन के किसी भी उत्तरदायित्व को, बिना छोटा-बड़ा समझे, सारे मन-दिल से निबाहने का आमंत्रण देता है। वर्ष 2005 में जब मैं सन्त इग्नासियुस के जन्म-स्थान की तीर्थयात्रा के लिए लोयोला पहुँचा, तो एक घटना ने मुझे गहराई तक प्रभावित किया। येसुसमाजियों के अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के प्रोविन्शल बड़े मनोयोग से रसोई घर में प्लेटों को धोने में मदद दे रहे थे। उन्हें ऐसा काम करते देखकर मुझे लगा कि यही है सच्ची सेवा और कार्य-भावना की एक उत्तम मिसाल, जो सन्त इग्नासियुस के जीवन-दर्शन से निकलती है। ऐसी मनोभावना हमें मानव-समाज के सभी लोगों के प्रति आदर-सम्मान और सद्व्यवहार की शिक्षा देती है। यदि हम सबकुछ के द्वारा ईश्वर की ही महत्तर महिमा करना चाहेंगे तो दूसरों का बुरा क्यों सोचेंगे, अपने अगल-बगल के किसी भी मनुष्य को या फिर किसी काम को छोटा या तुच्छ क्यों समझेंगे।

(घ) सृष्टि के साथ मनुष्य का तादात्मय सम्बन्ध

आज हम पर्यावरण-संकट के बारे बारंबार सुनते रहते हैं। Ecological crisis, climate change, global warming, pollution, … वगैरह हमारे दैनिक जीवन की शब्दावली के अभिन्न अंग बन गये हैं। क्या सन्त इग्नासियुस के जीवन-दर्शन में ऐसे कोई तथ्य हैं जो लोगों को पर्यावरण-संकट के प्रति जागरूक और क्रियाशील बना सकते हैं? जी हाँ! अपनी आध्यात्मिक साधना के अन्तिम भाग *Contempatio ad amorem* में वे सृष्टि की हरेक वस्तु में ईश्वर के प्रेम को पहचानने का आमंत्रण देते हैं ताकि सृष्टि के साथ मनुष्य का एक तादात्मय सम्बन्ध स्थापित हो सके। सृष्टि के संदर्भ में सन्त इग्नासियुस के MAGIS का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम सृष्ट की गयी वस्तुओं का ज्यादा-से-ज्यादा उपभोग करें। दुर्भाग्यवश मानवीय तृष्णा और लालच हमें MAGIS को एक नकारात्मक दिशा देते ह - हमारी चाहत होती है MORE and BETTER. सन्त इग्नासियुस का MAGIS हमें सृष्टि के संरक्षण और संवर्धन के हमारे प्रयासों के MAGIS के लिए प्रोत्साहित करता है - **better** understanding of God's creation and **more** sincere efforts to conserve and preserve it. वे हमें सृष्टि की हरेक चल-अचल या जीवित-मृत वस्तु में ईश्वर की उपस्थिति को जानने-पहचानने का आमंत्रण देते हैं। यदि हम सभी वस्तुओं में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर सकें, तो समस्त सृष्टि को हम अपना घर ही समझेंगे जिसे सजाने-सँवारने और जिसकी देख-भाल करने की जिम्मेदारी ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को दी है (Gen 2:15)। समस्त सृष्टि को अपना घर समझने का मतलब है सबों से प्रेममय सम्बन्ध बनाना और अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सबों की भलाई के लिए कार्य करना, क्योंकि सभी ईश्वर से सृष्ट किये गये हैं और सबों में ईश्वर विद्यमान हैं।

निस्संदेह सन्त इग्नासियुस के सम्पूर्ण जीवन पर गहन मनन-चिन्तन हमारे जीवन को नई दिशा दे सकता है। आत्मविश्वास से ओत-प्रोत कर हमें सफलता की नई ऊँचाई तक ले जा सकता है। ईश्वर में हमारे विश्वास को दृढ़ता, आपसो मेल-प्रेम और आदर-सम्मान की भावना को मजबूती प्रदान कर सकता है; तथा सृष्टि के प्रति हमारे उत्तरदायित्व को एक प्रभावी दिशा-निर्देश दे सकता है, बशर्ते हम अपने हृदय के द्वार खोल दें और उनके दिखाये मार्ग पर चलने की तत्परता ईमानदारी पूर्वक दिखायें। आइए, हम ईश्वर की कृपा के द्वारा सन्त इग्नासियुस के जीवन से मिलने वाले संदेशों को आत्मसात् करें।

सबों को सन्त इग्नासियुस के पर्वोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ। खुश पर्व!!